Name of Scholar	:	Vijay Naraya Mani
Supervisor	:	Prof. Hemlata Mahishwari
Department	:	Department of Hindi, Faculty of Humanities And Languages.
Title	:	Nabbe ke baad ki hindi kavita me pratirodh ki sanskriti ka adhyyan

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''नब्बे के बाद की हिन्दी कविता में प्रतिरोध की संस्कृति का अध्ययन'' में नब्बे के बाद की हिन्दी कविता में व्यक्त प्रतिरोध की विषय वस्तु को अध्ययन का विषय बनाया गया है। इसके अंतर्गत समकालीन चुनौतियों के आलोक में साहित्य की पक्षधरता की जाँच पड़ताल की गई।

इससे पहले के साहित्य को भी प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययन विश्लेषण का विषय बनाया गया है। जिसमें समय–समय पर समाज में होने वाले परिवर्तन और उससे उत्पन्न नई–नई चुनौतियों का सामना करने में, साहित्य ने क्या भूमिका निभाई है? इसका अन्वेषण किया गया। इस अन्वेषण के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि साहित्य के इतिहास में प्रतिरोध की सशक्त परम्परा रही है। इसी परम्परा का निर्वाह नब्बे के बाद की हिन्दी कविता में और सशक्त रूप से हुआ है।

भारतीय समाज व्यवस्था में नब्बे का दशक बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। नई आर्थिक नीति, जिसमें प्रमुख रूप से भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण को अपनाना रहा है। इस नई आर्थिक नीति को अपनाने के कारण भारतीय समाज मुक्त व्यापार व्यवस्था वाले देशों के समूह में सम्मिलित हो गया। भारतीय समाज का यह सम्मिलन मात्र आर्थिक ही नहीं बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक सभी स्तरों पर हुआ।

नब्बे के बाद के भारतीय समाज में कई तरह के परिवर्तन देखने को मिले। ये परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के थे। इसके नकारात्मक पहलुओं में गरीबी तथा आर्थिक गैर बराबरी, बाजारवाद का अतिशय प्रसार, उपभोग की प्रवृत्ति, छोटे व्यापारियों तथा उद्योग धन्धों का विनाश, मॉल कल्चर, सामाजिक

मूल्यों का पतन, हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार, देह व्यापार, मानव तस्करी आदि सामाजिक कुरीतियों का बढ़ते जाना है। नब्बे के बाद के कवियों ने इन सभी समस्याओं का कविता के अंतर्गत प्रतिरोध किया है। इस तरह से इस समय के रचनाकारों ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं का प्रतिरोध कर 'प्रतिरोध की संस्कृति' का निर्माण किया है।

नब्बे के बाद की हिन्दी कविता में 'अस्मिता मूलक विमर्शों' को रचनाकारों ने अपनी रचना का विषय प्रमुखता से बनाया है। इसमें मुख्य रूप से स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, सत्तामूलक विमर्श, निम्नवर्गीय विमर्श आदि है। इन सभी विमर्शों के केन्द्र में सदियों से वंचित, दमित, दलित तथा शोषित वर्ग है। ये समाज में बराबरी, सत्ता में हिस्सेदारी, आर्थिक, राजनैतिक तथा सत्ता के अन्य प्रतिष्ठानों में अपने उचित प्रतिनिधित्व की मांग करते हैं। भूमंडलीकरण की विचारधारा उत्तर–आधुनिकवाद इन विमर्शों को सैद्धांतिक रूप से मजबूती प्रदान करती है। अतः नब्बे के बाद की हिन्दी कविता में इन विमर्शों को सशक्त रूप से अभिव्यक्ति मिली है।ये सभी अस्मितामूलक विमर्श, परम्परित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सत्ता प्रतिष्ठानों के द्वारा, अब तक अपनाये जाने वाली नीतियों का प्रतिरोध करते हैं। इस तरह से ये भी प्रतिरोध की संस्कृति को निर्मित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अतः साहित्य के अंतर्गत प्रतिरोध की परम्परा अनवरत जारी है। यह समाज में उत्पन्न होने वाली किसी भी स्थिति, जो आम जन, साधारण जन के अधिकारों का हनन करती है। उनका शोषण करती है। साहित्य के द्वारा उनका प्रतिरोध किया जाता है, साथ ही समाज में जागरूकता का प्रसार कर, लोगों को सचेत करने का कार्य साहित्य के द्वारा किया जाता है जिससे समतामूलक समाज का विकास सम्भव हो सके। प्रस्तुत शोध प्रबंध इसी 'प्रतिरोध की संस्कृति' को समझने का एक प्रयास है।